हिन्दी एवं कन्नड भक्ति साहित्य में संगीत द्वारा रसनिष्पत्ति

(सूरदास, मीराबाई और पुरंदरदास, कनकदास के सन्दर्भ में)

HINDI EVAM KANNAD BHAKTI SAHITYA ME SANGEET DWARA RASNISHPATTI

(SOORDAS, MEERBAI AUR PURANDARADAS, KANAKADAS KE SANDARBH ME)

मंगलूरु विश्वविद्यानिलय की

पी. एच. डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध प्रबंध संक्षेपिका

FINAL SYNOPSIS SUBMITTED TO MANGALORE UNIVERSITY

FOR THE AWARD OF DOCTOR OF PHYLOSOPHY IN HINDI

शोध निर्देशक:
प्रो. डॉ. श्रीधर हेगडे
प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष,
फ़ील्ड मार्शल के.एम्.कार्यप्पा,
महाविद्यालय मडिकेरी -५७१२०१

शोधार्थी:
वंदना
अनुक्रमांक: 178020203
फ़ील्ड मार्शल के.एम्.कार्यप्पा,
महाविद्यालय मडिकेरी - ५७१२०१

Research Guide:
Prof. Dr.Shridhar Hegde
Professor, Head of the Department
Field Marshal K.M. Cariappa College
(A Constituent College of Mangalore university)
Madikeri-571201
Karnataka

Researcher:
Mrs.Vandana
Reg No: 178020203
Field Marshal K.M. Cariappa College
(A Constituent College of Mangalore university)
Madikeri-5712
karnataka

: अनुसंधान केन्द्र :

स्नातकोत्तर हिन्दी अध्ययन एवं अनुसंधान विभाग
विश्वविद्यानिलय कॉलेज मंगलूर, विश्वविद्यानिलय

DEPARTMENT OF POST GRADUATE STUDIES AND RESEARCH IN HINDI

UNIVERSITY COLLEGE MANGALURU, MANGALORE UNIVERSITY

2024

“हिंदी एवं कन्नड़ भक्ति साहित्य में संगीत द्‌वारा रसनिष्पत्ति ”

(सूरदास, मीराबाई, और पुरंदरदास, कनकदास के संदर्भ में)

HINDI EVAM KANNAD BHAKTI SAHITYA ME SANGEET DWARA RAS NISHPATTI

(SOORDAS, MEERABAI AUR PURANDARADAS, KANAKADAS KE SANDARBH ME)

अनुक्रमणिका

१. अपनी बात

२. आभार

३. पूर्ववर्ती अनुसंधान कार्य

४. अनुसंधान की पद्‌धतियाँ

५. शोध की उपलब्धियाँ

६. अनुसंधान की व्याप्ति एवं सीमा

७. अनुसंधान की नई दिशाएँ

८. अनुसंधान के अध्ययन का विभाजन

९. उपसंहार

१०. परिशिष्ट

११. आधार ग्रंथ

१२. संदर्भ ग्रंथ

१. अपनी बात

हिन्दी और कन्नड़ परिपूर्ण भाषाएँ हैं जिनका हजारों वर्षों का समृद्ध इतिहास है। किसी भी साहित्य के अध्ययन की सुविधा के लिए उसे विभिन्न युगों में बाँटा जाता है। प्रत्येक युग का अपना महत्व है और उसकी अपनी विशेषताएँ है। भारतीय आचार्यों ने साहित्य के काल विभाजन के चार उद्देश्य बताएँ हैं-यश प्राप्ति, अर्थ प्राप्ति, व्यवहार कुशलता तथा अनिष्ट से रक्षा। भारतीय साहित्य के भक्ति काल में इन सभी उद्देश्यों की पूर्ति हुई है। भक्ति साहित्य में युगीन आवश्यकता के अनुसार भावों की अभिव्यक्ति हुई और रस की नदियाँ प्रवाहित हुई। इन पदों को संगीतबद्ध कर गाया गया और इससे जनता में चेतना आयी। सामान्य जनता ने भक्ति काव्य का रसास्वादन किया तभी समाज में एक साथ भक्ति की लहर चली। भक्ति के ये पद इतने प्रभावशाली थे कि जिस ने भी इन्हें सुना उसे याद हो गया। फिर ये गीत लोग प्रतिदिन भजन कीर्तन के रूप में गाने लगे। इस प्रकार भक्ति के यह पद रस से इतने परिपूर्ण थे कि लोग सभी भेदभावों को भुलाकर भक्ति रस में डूब गये। इस समय भक्ति इस पराकाष्ठा को देखते हुए यह युग स्वर्ण युग कहलाया।

हम जानते हैं कि भारत पर कई वर्षों तक विदेशी शासन था। उस समय समाज की स्थिति अस्त-व्यस्त हो गयी थी। समाज में अराजकता, जाति, धर्म, वर्ण के नाम पर संघर्ष हो रहे थे। अतः समाज में सद्भावना उत्पन्न करने के लिए भक्तिकाल के कवियों ने प्रयास किया और वे सफल हुए। आज की सामाजिक स्थिति भी दूषित हो चुकी है। उसे ठीक करने में भक्ति काल के कवियों के काव्य सहायक हो सकते हैं। सामाजिक

विसंगतियों को दूर कर व्यवस्थित जीवन-क्रम को लाने के लिए हिंदी में तुलसीदास, मीराबाई, कबीर, नानक, रैदास, आदि कवियों की रचनाओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। कर्नाटक में भी पुरंदरदास, कनकदास, बसवेश्वर, अक्कमहादेवी आदि ने जनता को भक्ति मार्ग दिखाया। भक्ति कालीन काव्य रसानुभूति से परिपूर्ण तथा संगीतमय है। अपने इष्ट देवता के प्रति श्रध्दा और आस्था रखना भक्ति है। 'भक्ति' का अर्थ है सेवा करना या भजना। इस प्रकार भक्ति का तात्पर्य है स्वयं को ईश्वर के साथ जोड़ना। अपने आराध्य के प्रति भक्ति भाव से रचा साहित्य ही भक्ति साहित्य है। इससे सादगी, सहजता, भावनात्मक तीव्रता, व्यक्तिगत अनुभव और काव्य सौंदर्य जैसी विशेषताएँ होती है। इन्हीं विशेषताओं ने भक्ति साहित्य को सामान्य जनता से जोड़ा। भक्ति साहित्य में संगीत, नृत्य, नाटक, भजन, कीर्तन आदि कला रूप में शामिल है जो भक्ति साहित्य को सौंदर्य प्रदान कराते और उसमें आध्यात्मिक आकर्षण को बढ़ाते हैं।

सभी भारतीय भाषाओँ में भक्ति का प्रवाह देखने को मिलता है। इनमें हिंदी और कन्नड़ भाषाओँ में प्रचुर मात्रा में भक्ति साहित्य उपलब्ध है। हिंदी मेरी अध्यापन की भाषा है तो कन्नड़ मेरी मातृभाषा है इसीलिए मैंने अपने शोध कार्य के लिए हिंदी तथा कन्नड़ के उन भक्त कवियों को सम्मिलित किया जिनके साहित्य में संगीतात्मकता है। ये दोनों भाषाएँ अत्यंत समृद्ध हैं। इन दोनों भाषाओं में रचित साहित्य को संगीत के द्वारा रसनिष्पत्ति हेतु उपयोग किया गया है। हिंदी तथा कन्नड़ भक्ति साहित्य में भक्ति रस की धारा बही है। इन कवियों ने सदा मतभेद युक्त समाज में समानता और एकता का भाव लाने का सतत प्रयास किया है।

साहित्य में 'स' हित की भावना और सबको साथ लेकर चलने की भावना होती है तो संगीत भावों द्वारा मानव को मानव से जोड़ता है। भक्ति साहित्य ने सदा सरल जीवन की ओर प्रवृत्त किया। मेरा यह शोध कार्य इसी दिशा की ओर प्रवृत्त है। मेरे मन में ये जिज्ञासा थी कि भक्ति साहित्य को संगीत के द्वारा कैसे जन-मन तक पहुँचाया गया होगा? भक्ति साहित्य में कई रस देखने को मिलते हैं। जैसे भक्ति, करुणा, वात्सल्य, वीर, श्रृंगार, आदि। भक्ति साहित्य में प्रयुक्त इन रसों का निष्पादन किन रागों, तालों, और लयों में हुआ होगा? इन सभी प्रश्नों का उत्तर ढूंढ़ने के लिए मैंने यह शोध कार्य संपन्न किया।

भारतीय इतिहास के मध्यकाल में धर्म सुधारक शंकराचार्य ने भक्ति आन्दोलन के विकास में भूमिका निभाई। भक्ति आन्दोलन का आरम्भ दक्षिण भारत में आलवारों एवं नायनारों से हुआ जो कालांतर में उत्तर भारत सहित सम्पूर्ण दक्षिण एशिया में फ़ैल गया। इस भक्ति क्रांति के नेता शंकराचार्य एक महान विचारक और दाशर्निक थे। भारत में भक्ति की दो धारा बहीं - निर्गुण और सगुण। निर्गुण भक्ति में संत और सूफी थे जिनकी उदार एवं सहिष्णुता की भावना ने हिन्दुओं को प्रभावित किया। सगुण में राम भक्ति और कृष्ण भक्ति धारा बही। राम मर्यादा पुरुषोत्तम है और उनमें गाम्भीर्य है। इसी कारण इन पर रचा साहित्य भी गंभीरता पूर्ण है।कृष्ण लीलाधारी हैं और सबको प्रेम भाव से देखते हैं तो उनका साहित्य मनोहारी है। कृष्ण भक्ति सहित्य ने मुझे सदा आकर्षित किया। इसी कारण मैंने अपने शोध कार्य में "हिन्दी तथा कन्नड़ कृष्ण भक्त कवियों" के साहित्य को ही सम्मिलित लिया है।

हिंदी तथा कन्नड़ भाषा में कई कृष्ण भक्त हुए लेकिन मैंने उसमें से प्रतिनिधि कवियों को मात्र चुना जिनकी रचनाएँ संगीत के स्वरों में पिरोयी गयी। हिंदी के कृष्ण भक्त कवियों में सूरदास और मीराबाई तो वहीं कन्नड़ में पुरंदरदास और कनकदास को लिया है। हिंदी कृष्ण काव्य परम्परा में सूरदास प्रतिनिधि कवि हैं उन्होंने कृष्ण की लीलाओं, उसके रूप-सौंदर्य और प्रेम को स्वर दिया है। उनके काव्य में रस, संगीत और गीतात्मकता है। मीराबाई भक्ति भाव से मंदिरों में जाकर कृष्ण भक्तों के साथ नृत्य करती थी। उन्होंने कृष्ण को अपना सर्वस्व माना था। वे मन ही मन कृष्ण से प्रेम करती थी। उनके भजन में कृष्ण के प्रति समर्पण भाव दिखाई देता है।

कन्नड़ भक्ति साहित्य के प्रतिनिधि कवि पुरंदरदास वैष्णव कवि होने के साथ कृष्ण भक्त एवं समाज सुधारक थे। कर्नाटकी संगीत में उनके महत्त्व पूर्ण योगदान के लिए उन्हें 'संगीत पितामह' के रूप में सम्मानित किया गया। इनके काव्य में लोकरंजक तत्त्व एवं कृष्ण के प्रति प्रेम की गहन अनुभूति है। कन्नड़ के दास-साहित्य के श्रेष्ठ कवि कनकदास कृष्ण के रूप-वर्णन और उनकी स्तुति के लिए प्रसिद्द हैं। हरिदास पंथी कनकदास द्वैत वेदांत के दार्शनिक थे।

मैंने कर्नाटकी संगीत के इन दोनों संगीतकारों, कवियों की रचनाओं का अध्ययन किया जिन्हें वे कीर्तन के रूप में गाते थे। इस कारण मैंने हिंदी तथा कन्नड़ के इन चार प्रतिनिधि कृष्ण भक्त कवियों की रचनाओं को संगीतात्मकता के परिप्रेक्ष्य में जानने और समझने का प्रयास किया है। इन भक्तों ने अपने काव्य को संगीत द्वारा रसनिष्पत्ति की ओर प्रवृत्त किया। इन कवियों ने अपने काव्य को मलहरी, झंजुटी,आदी रागों में कीर्तन कर भक्तों को संप्रेषित किया जिस से उन में भक्ति की अविरल धारा प्रवाहित

हुई। रसनिष्पत्ति की इस प्रक्रिया का अध्ययन करना मेरे शोध कार्य का प्रमुख ध्येय रहा।

 इस दिशा में मेरे शोध निर्देशक प्रो.श्रीधर हेगडे जी का मार्गदर्शन स्मरणीय है, जो हिंदी तथा कन्नड़ साहित्यकार एवं संगीत शास्त्र के ज्ञाता है। इन्हीं के सुझाव से मैंने इस शोध महाप्रबंध की तैयारी की है। साथ ही साथ जिन्होंने मुझे साहित्य और संगीत को लेकर शोध करने की प्रेरणा दी। इसके लिए मैं सदा उनकी ऋणी रहूंगी। मैं आशा करती हूँ कि मेरा यह शोध, भक्ति काव्य और संगीत को एक नया आयाम देगा। यही मेरी उपलब्धि होगी। इसे सुधी विद्वान् लोग स्वीकार करेंगे।

२. आभार

शोध एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिससे मानव ज्ञान को दिशा मिलती है। शोध से मानव जिज्ञासा को संतुष्टि मिलती है। मैंने हिंदी साहित्य में एम.ए की उपाधि मंगलूरु विश्वविद्यालय से पायी। फिर मुझे यहीं से शोध कार्य करने का सुअवसर मिला। संगीत के प्रति लगाव होने के कारण मैंने हिंदी तथा कन्नड़ भक्ति साहित्य को संगीत के साथ जोड़ रसनिष्पत्ति के परिप्रेक्ष में समझना चाहा। मेरे इस शोध कार्य की प्रक्रिया को सुलभ बनाने में कई लोगों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। मैं उनके प्रति आभार प्रकट करना चाहती हूँ।

मुझे इस अनुसन्धान कार्य की प्रेरणा अपने आदरणीय गुरु एवं शोध निर्देशक प्रो. डॉ.श्रीधर हेगडे जी से मिली। संगीत विद्यालय के मेरे प्रथम गुरु गीता गायत्री, आर.एस.नंद कुमार कर्नाटकी संगीत के गायक, विद्वान् डॉ. के गणपति भट्ट:,धारवाड (संस्कृत-संगीत विद्वान्) ने मुझे बहुत प्रोत्साहित किया इनके अलावा प्रो. डॉ. नागरत्ना

राव, संयोजक स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग विश्वविद्यालय कॉलेज,मंगलूरू, प्रो. डॉ. सुमा टी. आर, विभागाध्यक्ष, स्नातक हिंदी विभाग विश्वविद्यालय कॉलेज,मंगलूरू, फ़ील्ड मार्शल के .एम्. कार्यप्पा महाविद्यालय मडिकेरी के प्रधानाचार्य और पुस्तकालय के कर्मचारियों का मैं हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ। श्री वरदेन्द्र हरिदास साहित्य मंडल, कसबालिंगसगुरु, जिला रायचूरु, कर्नाटक, डॉ.शीलादास (सेवानिवृत प्रधानाचार्य L.V.D कॉलेज रायचूरू) इन से भी मुझे अपने इस शोध कार्य में खूब सहायता मिली। प्रो. डॉ. श्रीधर जी से शोध के संबंध में मैं जब मिली तो उन्होंने ने अपनी सूक्ष्म शोध दृष्टि से मुझे निर्देशन दिया। मुझे मेरे प्रिय विषय संगीत से पुनः भेटं करवाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान है और इस कार्य के लिए मैं उनका शुक्रगुजार हूँ। मेरा शोधकार्य हिंदी एवं कन्नड भक्ति साहित्य में संगीत द्वारा रसनिष्पत्ति (सूरदास, मीराबाई और पुरंदरदास, कनकदास के सन्दर्भ में) इस विषय पर मेरा शोध कार्य शुरू हुआ। मेरे विषय चयन के पीछे मेरा उद्देश्य यह रहा है कि साहित्य एवं संगीत के संबंध में रस संबंधी विविध आयामों को दर्शाना।

मेरे मन में शोध कार्य का बीज बोने वाले मेरे पति रंगनाथ के कुलकर्णी, सहायक प्राध्यापक, डिपार्टमेंट ऑफ़ इनफार्मेशन साइंस एंड इंजीनियरिंग, केनरा इंजीनियरिंग कॉलेज मंगलूरू ने प्रतिदिन मुझे प्रेरणा दी और मेरा उत्साह बढ़ाया। उनकी सहायता मेरे लिए अविस्मरणीय है। मेरे इस सफलता के पीछे मेरी बेटी स्तुति, बेटा शिवप्रशस्ति ने मेरा हौसला बढाया और सदा मेरे लिए अनुकूल वातावरण दिया। मेरे माता-पिता श्री.किशनराव.टी.कुलकर्णी (Rtd.A.S.I) तथा श्रीमती रेणुका कुलकर्णी एवं सास-ससुर श्रीमती

कुसुमाबाई कुलकर्णी एवं स्व. डॉ किशनराव कुलकर्णी जी मेरे जीवन और अनुसंधान के प्रेरणास्रोत रहें। मेरे परिवार से प्रतिदिन मुझे प्रेरणा और मार्गदर्शन मिला।

३. पूर्ववर्ती अनुसंधान कार्य

भारतीय साहित्य में भक्ति काव्य स्वर्ण काव्य है जिस पर जितना अध्ययन हो उतना ही कम है। वर्तमान में हम इक्कीसवीं सदी में हैं जहाँ अनगिनत विषयों की भरमार है लेकिन भक्ति साहित्य गहरा और विस्तृत है। आज तक भक्ति साहित्य में कई शोध हुयें हैं फिर भी इस में कुछ विषय अनछुए रह गये है। मैंने भक्ति काव्य को संगीत से जोड़ते हुए उसकी रसनिष्पत्ति की प्रक्रिया का अध्ययन किया है। इस दिशा में मेरा यह कार्य पहला ही है। अब तक भक्ति काव्य को लेकर जो अनुसंधान हुए हैं वे इस प्रकार है।

> मध्ययुगीन हिंदी भक्ति काव्य के सन्दर्भ में वैष्णव सम्प्रदायों का तुलनात्मक अध्ययन पाण्डेय, वागीशधुत्त (छत्रपति शिवाजी महाराज विश्वविध्यालय २०११)

> निर्गुण भक्ति के परिप्रेक्ष में हिन्दी एवं कन्नड की संत महिलाओं का तुलनात्मक अध्ययन। कोल्लूर शालिवाहन. बि(मैसूरू विश्वविध्यालय. २०११)

> मध्ययुगीन हिंदी भक्ति साहित्य के विषय में मुस्लिम कवियों का योगदान।

संतोष (पंजाब विश्वविध्यालय, २०११)

> हिंदी भक्ति काव्य में निहित संगीत तत्वों का विवेचनात्मक अध्ययन कृष्ण भक्ति काव्य के संदर्भ में, गरिमा गुप्ता (कुरुक्षेत्र विश्वविध्यालय. २०१३)

पूर्ववर्ती शोध-कार्य में जिस विषय पर शोध कार्य नहीं हुआ, उस दिशा में मैंने प्रस्तुत शोध कार्य आरम्भ किया। 'हिंदी एवं कन्नड भक्ति साहित्य में संगीत द्वारा रसनिष्पत्ति (सूरदास, मीराबाई, और पुरंदरदास, कनकदास के संदर्भ में) अब तक इस विषय पर शोध कार्य नहीं हुआ है।

४. अनुसंधान की पद्धतियाँ

मैंने अपने इस शोध कार्य को संपन्न करने में निम्न पद्धतियों का अनुसरण किया है-

१. अन्वेषणात्मक पद्धति

२. संश्लेषणात्मक पद्धति

३. विश्लेषणात्मक पद्धति

४. भाषा वैज्ञानिक पद्धति

५. साक्षात्कार पद्धति

६. तुलनात्मक पद्धति

७. मूल्यांकन पद्धति

१. अन्वेषणात्मक पद्धति :

इस पद्धति में किसी समस्या के संबंध में प्राथमिक जानकारी प्राप्त कर कल्पना का निर्माण और अध्ययन की रूपरेखा तैयार की जाती है। प्रस्तुत शोध-प्रबंध की रूपरेखा तैयार

करने के लिए “हिंदी एवं कन्नड़ भक्ति साहित्य में संगीत द्वारा रसनिष्पत्ति ” (सूरदास, मीराबाई, और पुरंदरदास, कनकदास के संदर्भ में)” विषय पर अध्ययन करने के उद्देश्य से भक्ति साहित्य एवं संगीत से सम्बन्धित पुस्तकों का अन्वेषण आरंभ किया। इसमें मुझे अलग-अलग मार्ग दिखाई दिए जैसे हिंदी-कन्नड भक्ति साहित्य, साहित्य में रस, संगीत एवं संगीत रस आदि पुस्तकों का अन्वेषण कर अध्ययन किया गया है। अन्वेषण में उपलब्ध जानकारी को शोध-प्रबंध में जोड दिया है।

२. संश्लेषणात्मक पद्धति :

इस पद्धति में, हम ज्ञात से अज्ञात की ओर आगे बढ़ते हैं। किसी भी विषय को सुचारु रूप से अध्ययन करने के लिए उसे अलग-अलग भागों में विभाजन किया जाता है। इस शोध कार्य में भक्ति साहित्य तथा संगीत के ग्रंथों, आलेखों तथा विषयों का संग्रह कर के, उन्हें अलग-अलग भागों में विभाजन किया है। उनके बीच की समानता और अंतर को अध्ययन में प्रस्तुत किया गया है।

३. विश्लेषणात्मक पद्धति :

विश्लेषणात्मक अनुसंधान में शोध से संबंधित सामग्री संकलित की जाती है। इसके बाद जानकारी के आधार पर संकलित की गई सामग्री का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है। पूर्व में एकत्रित किए गए तथ्यों, आँकड़ों, विचारों आदि से परे अंतर्दृष्टि रखते हुए संचित तथ्यों व आँकड़ों के पीछे की कहानी कुछ और भी हो सकती है। जैसे

आरंभ में प्रकाशित हिंदी-कन्नड भक्ति साहित्य का अध्ययन किया और संगीत तथा साहित्य रसों से सम्बन्धित ग्रन्थों की संख्या की कमी को लेकर अध्ययन किया। इसमें से मुझे ज्ञाता हुआ कि “हिंदी एवं कन्नड़ भक्ति साहित्य में संगीत द्वारा रसनिष्पत्ति ” (सूरदास, मीराबाई, और पुरंदरदास, कनकदास के संदर्भ में) विषय पर पहली बार अध्ययन हो रहा है। इसमें एक बात हो सकती है कि इस विषय पर मुद्रित अलग अलग ग्रंथों को एकत्रित कर उन पर अध्ययन कार्य किया गया।

४. भाषा वैज्ञानिक पद्धति :

यह शोध की शास्त्रीय पद्धति है। इसके अंतर्गत भाषा की संरचना का अध्ययन और विश्लेषण किया जाता है। “हिंदी एवं कन्नड़ भक्ति साहित्य में संगीत द्वारा रसनिष्पत्ति” (सूरदास, मीराबाई, और पुरंदरदास, कनकदास के संदर्भ में) विषय के लिए भाषा का गहरा अध्ययन आवश्यक होता है। इस शोध-प्रबंध में हिंदी और कन्नड भक्ति काव्य का अध्ययन संगीत की दृष्टि से किया गया है।

५. साक्षात्कार पद्धति :

अनुसंधान में साक्षात्कार पद्धति का उद्देश्य मौलिक जानकारी प्राप्त करना होता है। यह पद्धति गहन और सही तथ्यों का पता लगाने के लिए मदद करती है। भक्ति साहित्य के विद्वानों एवं संगीतज्ञों का साक्षात्कार किया है। अपने शोध विषय से संबंधित विचारों को शोध-प्रबंध के अध्याय में सम्मिलित किया गया है।

६. तुलनात्मक पद्धति :

तुलनात्मक पद्धति का अर्थ आपस में तुलना करना है। तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग हम अपने दिन प्रतिदिन के जीवन में भी करते हैं। नेताओं, अधिकारियों, कर्मचारियों, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की तुलना कर उन्हें भला या बुरा, उचित या अनुचित, सफल या असफल ठहराते हैं। प्रस्तुत शोध-प्रबंध में हिंदी-कन्नड भक्तिसाहित्य और संगीत से संबन्धित तथ्यों का कई दृष्टियों से तुलनात्मक अध्ययन किया है।

७. मूल्यांकन पद्धति :

मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसके आधार पर किसी विषय के ज्ञान का आकलन करते हैं। मूल्यांकन के द्वारा किसी विषय में कमियों या विशेषताओं का आकलन किया जाता है। मूल्यांकन से ज्ञान का विकास होता है। प्रस्तुत शोध-प्रबंध में अलग-अलग दृष्टिकोण से “हिंदी एवं कन्नड़ भक्ति साहित्य में संगीत द्वारा रसनिष्पत्ति (सूरदास, मीराबाई, और पुरंदरदास, कनकदास के संदर्भ में)” विषय पर मूल्यांकन किया गया है।

५. शोध की उपलब्धियाँ

मेरा यह शोध दो भाषाओं के भक्ति साहित्य को लेकर किया गया है। ये भाषाएँ भारतीय हैं किन्तु दो भिन्न परिवारों से हैं। हिंदी आर्य परिवार की भाषा है तो कन्नड़ द्रविड़ परिवार की भाषा है। लेकिन इन दोनों में भक्ति भाव समान है। मैंने इन दोनों भाषाओं के भक्ति काव्य में संगीतात्मकता और उस से हुई रसनिष्पत्ति के विभिन्न आयामों को देखने का प्रयास किया है। जैसे-

- कन्नड़ साहित्य की अमूल्य धरोहर को प्रकाश में लाने की कोशिश की गई है।
- भारतीय संगीत के दो अलग संगीत शैलियों का अध्ययन किया गया है।
- समृद्ध कन्नड़ भक्ति साहित्य का हिन्दी के विराट क्षेत्र में लाया हया है।

६. अनुसंधान की व्याप्ति एवं सीमा

साहित्य एवं संगीत विषय एक विस्तृत अध्ययन का क्षेत्र है। इसमें प्रवेश करना उतना सरल नहीं है। अध्ययन सामग्री की कमी को ध्यान में रखते हुए, पहले मैंने साहित्य-संगीत पर शोध कार्य किया। हिंदी और कन्नड, संगीत तीनों के विषयों को चुन लिया। कोर्सवर्क और साहित्यिक पुनर् मूल्यांकन लिखते समय पता चला कि यह बहुत विस्तृत होगा। इसलिए हिंदी और कन्नड कृष्ण भक्त कवियों का चयन किया। इन के द्वारा रचे गये पदों का अध्ययन कर इन के पदों में प्रस्तुत रागों के रसों का अध्ययन किया। इस पर काम करने से पता चला कि हिंदी और कन्नड भक्ति साहित्य, संगीत पर अध्ययन कार्य कम हुआ है और ग्रन्थ भी कम रचें गए हैं। इन सब का संश्लेषण कर विश्लेषण

करना आसान नहीं है। इस लिए "हिंदी एवं कन्नड़ भक्ति साहित्य में संगीत द्‌वारा रसनिष्पत्ति " (सूरदास, मीराबाई, और पुरंदरदास, कनकदास के संदर्भ में)" स्वतंत्र विषय का चयन किया।

७. अनुसन्धान की नई दिशाएँ

प्रस्तुत शोध विषय का अनुशीलन करते समय इस विषय के विविध आयाम मेरे सामने आए जो स्वतंत्र रूप से अनुसन्धान के विषय हो सकतें हैं। प्रस्तुत अनुसन्धान की अपनी सीमा होने के कारण उन विविध आयामों का विवेचन करना साध्य नहीं है। जो इस प्रकार है-

- कन्नड़ भक्ति साहित्य के वचन साहित्य तथा हिन्दी भक्ति साहित्य के सूफ़ी साहित्यों में संगीत द्‌वारा रसनिष्पत्ति।
- कन्नड़ भक्ति साहित्य के आय्दक्की लक्कम्म और मीरा बाई के साहित्य में संगीत।
- हिंदी एवं कन्नड़ भक्ति साहित्य के कबीर, मीरा, बसवन्ना, अक्कमहा देवी के साहित्य में तुलनातत्मक अध्ययन।
- भक्ति साहित्य, संगीत, नृत्य का तुलनात्मक अध्ययन।

८. अनुसंधान के अध्ययन का विभाजन

प्रथम अध्याय : साहित्य और संगीत द्‌वारा रसनिष्पत्ति : अवधारणा और स्वरुप

प्रस्तावना

१.१. रसनिष्पत्ति : अवधारणा और स्वरुप

१.१.१. रस की अवधारणा

१.१.२. रस का स्वरुप

१.१.३. रस के अवयव

१.१.४. रस के भेद

१.१.५. रसनिष्पत्ति

१.१.६. रस सिद्‌धांत

१.२. साहित्य और संगीत में रसनिष्पत्ति

१.२.१. साहित्य में रसनिष्पत्ति

१.२.२. स्थायी भाव और रसनिष्पत्ति

१.२.२.१. छंद और शब्द रचना

१.२.३ संगीत में रसनिष्पत्ति

१.२.३.१. स्वर लय और ताल

१.२.३.२. ताल में रस विभाजन

१.३. निष्कर्ष

द्‌वितीय अध्याय : हिंदी तथा कन्नड़ भक्ति साहित्य का अवलोकन

प्रस्तावना

२.१. भक्ति का अर्थ, स्वरूप

२.२. भक्ति साहित्य की अवधारणा

२.३ भक्ति के विविध रूप

२.४. हिंदी भक्ति साहित्य

२.५. कन्नड़ भक्ति साहित्य

२.६. निष्कर्ष

तृतीय अध्याय : हिंदी और कन्नड़ भक्ति साहित्य में संगीत

प्रस्तावना

३.१. संगीत की अवधारणा और स्वरूप

 ३.१.१. भारतीय संगीत का स्वरुप एवं इतिहास

३.२ संगीत के भेद

 ३.२.१.हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत

  ३.२.१.१. हिन्दुस्तानी संगीत शैली

  ३.२.१.२. देसी संगीत

 ३.२.२. कर्नाटक शास्त्रीय संगीत

  ३.२.२.१ कर्नाटकी संगीत की विशेषतायें

३.३ हिंदी साहित्य में संगीत का विकास

३.४ कन्नड साहित्य में संगीत का विकास

३.५. साहित्य में संगीत का औचित्य

३.६. निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : हिंदी के भक्तिकालीन प्रतिनिधि काव्य में संगीत के रसनिष्पत्ती

प्रस्तावना

४.१ सूरदास का कृष्ण भक्ति काव्य

४.१.१. सूर की कृष्ण भक्ति

४.१.१.१. भावपक्ष

४.१.२.२. कलापक्ष

४.१.२. सूर के साहित्य में संगीत द्वारा रसनिष्पत्ति

४.१.३. सूरदास के पदों में संगीत

निष्कर्ष

४.२. मीराबाई का कृष्ण काव्य

४.२.१. मीराबाई की कृष्ण भक्ति

४.२.१.१. भावपक्ष

४.२.१.२. कलापक्ष

४.२.२. मीरा के साहित्य में संगीत द्वारा रसनिष्पत्ति

४.२.३. मीरा के पदों में संगीत द्वारा रसनिष्पत्ति

निष्कर्ष

पंचम अध्याय : कन्नड़ के भक्तिकालीन प्रतिनिधि काव्य में संगीत के रसनिष्पत्ती

प्रस्तावना

५.१.पुरंदरदास का कृष्ण काव्य

५.१.१. पुरंदरदास की कृष्ण भक्ति

५.१.१.१ भावपक्ष

५.१.१.२. कलापक्ष

५.१.२. पुरंदरदास के साहित्य में संगीत द्वारा रसनिष्पत्ति

५.१.३. पुरंदरदास के पदों में संगीत द्वारा रसनिष्पत्ति

निष्कर्ष

प्रस्तावना

५.२. कनकदास का कृष्ण भक्ति काव्य

५.२.१. कनकदास की कृष्ण भक्ति

५.२.१. भावपक्ष

५.२.२. कलापक्ष

५.२.२. कनकदास के साहित्य में संगीत द्वारा रसनिष्पत्ति

५.२.३. कनकदास के पदों में संगीत द्वारा रसनिष्पत्ति

निष्कर्ष

षष्ठ अध्याय : हिन्दी एवं कन्नड़ भक्ति साहित्य में संगीत द्वारा रसनिष्पत्ति

प्रस्तावना

६.१. हिंदी तथा कन्नड़ साहित्य तथा संगीत में रसनिष्पत्ति

६.२. हिंदी तथा कन्नड़ प्रतिनिधि कवियों के साहित्य में रसनिष्पत्ति

६.३. हिंदी तथा कन्नड़ प्रतिनिधि कवियों के साहित्य में संगीत द्वारा रसनिष्पत्ति

निष्कर्ष

उपसंहार

परिशिष्ट:

आधार ग्रन्थ

सहायक ग्रन्थ

प्रथम अध्याय : साहित्य और संगीत द्वारा रसनिष्पत्ति : अवधारणा और स्वरुप

- इस में रस का अर्थ, रसनिष्पत्ति , आचार्य भरतमुनि के अनुसार रस सिद्धान्त, अन्य विद्वानों द्वारा दिये गए परिभाषाओं का अध्ययन करते हुए रस के अवयव, रस के प्रकार का वर्णन है। स्थायी भाव तथा उससे सम्बन्धित रस एवं राग, स्वर, लय और ताल का अर्थ बताते हुए रस से इनके सम्बन्ध का परिचय है। थाट, गायन समय और रस का सम्बंध, छन्द और शब्द रचना से रस का सम्बन्ध बताते हुए संगीत में रसनिष्पत्ति की चर्चा की गयी है। संगीत में रसनिष्पत्ति में स्वर लय और ताल में रस के विभाजन का अध्ययन किया गया है। अंत में निष्कर्ष के रूप में यह बताया गया है कि सच में काव्य साहित्य में संगीत द्वारा रसनिष्पत्ति होती है।

द्वितीय अध्याय : हिंदी तथा कन्नड़ भक्ति साहित्य का अवलोकन

- इस अध्याय में भक्ति का अर्थ, भक्ति साहित्य का उदय, विद्वानों द्वारा की गई व्याख्याओं का वर्णन है। नवधा भक्ति, उसका अर्थ एवं प्रकारों का संक्षिप्त अनुशीलन करते हुए हिन्दी एवं कन्नड़ भक्ति साहित्य का उद्भव, विविध परिस्थितियों में भक्ति साहित्य के विकास का अध्ययन किया गया है। अंत में निष्कर्ष के रूप में हिंदी तथा कन्नड़ भक्ति साहित्य के प्रमुख चरणों पर दृष्टि डाली गई है।

तृतीय अध्याय : हिंदी और कन्नड़ भक्ति साहित्य में संगीत

- इस अध्याय में हिन्दुस्तानी संगीत, कर्नाटकी संगीत की विधाओं का परिचय तथा उभय साहित्य के उद्भव एवं विकास का विवरण दिया गया है। साहित्य और संगीत दो अलग अलग कलाएँ है और इन का समन्वय तथा विकास का अध्ययन किया गया है। हिंदी भक्ति काव्य की तरह कन्नड़ साहित्य में दास साहित्य और उस से पहले के साहित्य में संगीत समन्वय हुआ है। संगीत, साहित्य कलाओं का व्यापक विकास भी हुआ है। साहित्य में संगीत का ओचित्य बताते हुए इन सभी विषयों पर प्रकाश डाला गया है। अंत में निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कन्नड़ भक्ति काव्य में पुरंदरदास और कनकदास प्रतिनिधि रचनाकार है जिनके काव्य को संगीत द्वारा प्रभावशाली ढंग से निरुपित किया गया है।

चतुर्थ अध्याय : हिंदी के भक्ति कालीन: प्रतिनिधि काव्य में संगीत के रस

- इस अध्याय में हिन्दी भक्ति साहित्य के प्रतिनिधि कवि सूरदास, मीराबाई की काव्य साधना, उसके भावपक्ष तथा कलापक्ष का विश्लेषण है। सूरदास और मीराबाई के साहित्य में संगीत द्वारा रसनिष्पत्ति की चर्चा की गई है। उनके पदों में संगीत प्रस्तुति के स्वरुप का अध्ययन भी हुआ है। अंत में निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि हिंदी भक्ति काव्य में सूरदास और मीराबाई प्रतिनिधि रचनाकार है जिनके काव्य को संगीत द्वारा रस निष्पन्न किया गया है।

पंचम अध्याय : कन्नड़ के भक्ति कालीन प्रतिनिधि काव्य में संगीत के रस

- इस अध्याय में कन्नड़ भक्ति साहित्य के प्रतिनिधि कवि पुरंदरदास, कनकदास की काव्य साधना, उसके भावपक्ष और कलापक्ष का वर्णन करते हुए उनके के साहित्य में संगीत द्वारा रसनिष्पत्ति की चर्चा की गई है। साहित्य में संगीत के तत्व को वर्णित किया गया है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि कन्नड़ भक्ति साहित्य में संगीत के तत्त्व प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं।

षष्ठ अध्यायः हिन्दी एवं कन्नड़ भक्ति साहित्य में संगीत द्वारा रसनिष्पत्ति

- इस अध्याय में हिंदी तथा कन्नड़ भक्ति साहित्य तथा संगीत के रसों की तुलना की गयी है। इन दोनों भाषाओं के प्रतिनिधि कवियों के साहित्य में रसनिष्पत्ति के अवयवों का अध्ययन हुआ है। हिंदी तथा कन्नड़ प्रतिनिधि कवियों के साहित्य में संगीत के रसों का अनुशीलन करते हुए उन काव्यों में भैरव, यमन, कल्याण आदि रागों तथा मन्द्र, तीव्र, मध्यम लयों का उदाहरण सहित विवरण दिया गया है।

५. उपसंहार

आधुनिकता के कारण समाज में मानवीय मूल्य, भारतीय संस्कृति, साहित्य एवं कला के उद्येश्य बदलते जा रहे हैं। इनमें सकारात्मकता की कमी नजर आ रही है। जैसे - जैसे भौगोलिक दूरियाँ कम हो रही हैं, वैसे- वैसे साहित्य में भी नए-नए

विचारों का आदान-प्रदान अधिक हो रहा है। इस के परिणाम स्वरूप भारतीय मूल्य कम होते दिखाई दे रहे हैं। समाज में सकारात्मकता और शांति स्तापना हेतु भक्ति साहित्य के मूल्यों की पुनःस्थापना करना अनिवार्य है। इस के लिए भक्ति साहित्य को संगीत आदि भारतीय ललित कलाओं के परिप्रेक्ष्य में पुनरावलोकन करना होगा। इस दृष्टि से मेरा प्रस्तुत अनुसन्धान का विषय, साहित्य एवं संगीत प्रेमियों को सफलता की ओर लेकर जायेगा। साहित्य तथा संगीत के विद्यार्थियों तथा शोधार्थियों को अध्ययन के लिए नई दिशा देगी।

रसों के बिना मानव जीवन नीरस है। रस मानव के जीवन में प्रमुख पात्र निभाता है। रस तीन रूपों में हमारे जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जैसे खाद्य के रस, औषधीय रस और भावात्मक रस। भावात्मक रस द्वारा मानव मन के भाव व्यक्त होते हैं। ये रस ललित (साहित्य, संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला) कलाओं से परिपूर्ण हैं। ललित कलाओं में रसनिष्पत्ति उसका प्रमुख अंग है। साहित्य, संगीत एवं अन्य कलाओं में रस भावों को जगाने का कार्य करते हैं। इससे मानव मन आनंदित होता है। यह रस मानव मन में जन्म लेकर, अलग अलग संदर्भ में विविध भावों के सहारे प्रकट होतें हैं। भरतमुनि के अनुसार ९ रस (श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, विभत्स, अद्भुत, शांत,) हैं और इस में वात्सल्य एवं भक्ति रस को जोड़ कर ११ रस माने गये हैं।

मानव मन में भले ही यह सभी रस स्थायी भाव के रूप में निहित हैं परन्तु साहित्य और संगीत के रस शब्दों तथा स्वरों की सहायता से मानव को आनंदानुभूति कराते हैं।

साहित्य समाज के 'स' हित को स्थापित करता है। साहित्य में भक्ति साहित्य को स्वर्णिम साहित्य कहा गया है। भक्ति साहित्य में भक्ति रस के साथ-साथ अन्य सकारात्मक भाव जगाने वाले रस प्रस्तुत हुए हैं। भक्ति साहित्य के इन्हीं रसों को संगीत ने अपने स्वरों के सहारे अधिक प्रभाव पूर्ण ढंग से प्रसार करने का कार्य किया है। इस तरह 'हिंदी तथा कन्नड़ भक्ति साहित्य में संगीत द्वारा रसनिष्पत्ति हुई है उसका अवलोकन इस शोध कार्य में किया गया है। हिंदी के भक्त कवि सूरदास और मीराबाई तथा कन्नड़ के भक्त कवि पुरन्दरदास और कनकदास जी के भक्ति काव्य में निहित संगीतात्मकता तथा उसमें रसनिष्पत्ति की प्रक्रिया का अध्ययन किया गया है। इन दोनों भाषाओँ के भक्ति साहित्य को संगीत द्वारा निष्पन्न करने में सफलता मिली है। लेकिन ध्यातव्य है कि साहित्य में जितने रसों का प्रयोग होता है उन सभी का प्रयोग पूर्णतः संगीत द्वारा नहीं हो पाया है। केवल कुछ रस जैसे भक्ति, करुणा, वात्सल्य, शांत, तथा वीर रसों का प्रयोग संगीत में हुआ है।

११.परिशिष्ट

परिशिष्ट १. सूरदास, का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

परिशिष्ट २. मीराबाई का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

परिशिष्ट ३. पुरंदरदास का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

परिशिष्ट ४. कनकदास का का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

१२. आधार ग्रन्थ

[१]. डॉ. एच.बिहारी और डॉ. आर. कुमार, सूरसागर साटीक भाग -१, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, १९९१.

[२]. राकेश चौहाण, मीरा के लोकप्रिय पद, सर्वाधिकार प्रकाशक आधीन प्रकाशन २००४, ISBN: ८१-७६०४-३२८-१.

[३]. विद्यालंकार प्रो. सा. कृ. रामचन्द्र राव, प्रो. अ. रा. मित्र(१९८५) पुरंदर साहित्य दर्शन -संपुट -१ "जीवन दर्शन" प्रकाशित: श्री पुरंदरदास की पांचवीं शताब्दी के अवसर पर कन्नड़ और संस्कृति निदेशालय.

[४]. विद्यालंकार प्रो सा. कृ. रामचन्द्र राव, प्रो. अ. रा. मित्र (१९८५) पुरंदर साहित्य दर्शन -संपुट -२ "आध्यात्म दर्शन" प्रकाशित : श्री पुरंदर दास की पांचवीं शताब्दी के अवसर पर कन्नड़ और संस्कृति निदेशालय.

[५]. विद्यालंकार प्रो. सा. कृ. रामचन्द्र राव, प्रो. अ. रा. मित्र (१९८५) पुरंदर साहित्य दर्शन -संपुट -३ "समाज दर्शन" प्रकाशित: श्री पुरंदर दास की पांचवीं शताब्दी के अवसर पर कन्नड़ और संस्कृति निदेशालय.

[६]. विद्यालंकार प्रो सा. कृ. रामचन्द्र राव, प्रो. अ. रा. मित्र (१९८५) पुरंदर साहित्य दर्शन -संपुट -४ "कीर्तन दर्शन" प्रकाशित: श्री पुरंदर दास की पांचवीं शताब्दी के अवसर पर कन्नड़ और संस्कृति निदेशालय.

[७]. डॉ. भट्ट, पी.वी. (संपा.). (२०१०), पुरंदरदासर कीर्तनगलु (2nd संस्क.), श्रीमन मध्वश्सिद्धांत ग्रंथालय उडुपि

[८]. प्रो. पि. स. यडपडीत्ताय. पावंजे गुरुरायरु संपादिसिरुव कनकदासर कीर्तनेगालु, कनकदास अध्ययन पीठ, मंगलूरू विश्वविद्यालय.

६. सहायक ग्रन्थ

[१]. डॉ. सुधांशु कुमार शुक्ल, भारतीय काव्यशास्त्र सिद्धांत और समस्याएँ, सूर्य प्रकाश श्रीवास्तव, नवालोक प्रकाशन, २०१३.

[२]. डॉ. श्रीधर रामकंत हेगड़े, भारतीय काव्य मीमंसा,

[३]. भारतीय संगीत में लय और ताल का रस सिद्धांत से संबंध, श्रीमती ललित मालवीया १९९८, शोध प्रबंध, संगीत एवं प्रदर्शन कला विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद.

[४]. पंडित विष्णु नारायण भातखंडे, भातखंडे संगीत शास्त्र (हिंदुस्तानी संगीत पद्धति) चौथा भाग, हाथ रस उत्तर प्रदेश द्वारा प्रकाशित, मार्च, १९४८.

[५]. ती.नं.श्रीकंठय्या. भारतीय काव्य मीमांसे, मैसूर विश्व विद्यालय कन्नड़ ग्रंथ माले.

[६]. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, विश्वभारती प्रकाशन नागपुर- १२. ISBN: ८-७७१४-०८३-३, २००५.

[७]., शिव कुमार शर्मा, हिन्दी साहित्य: युग और प्रवृत्तियाँ, सहस्राब्दी बीसवाँ और विपरीत संस्करण। अशोक प्रकाशन, दिल्ली, २०१९.

[८]. डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी भूतपूर्व रीडर, हिंदी साहित्य का सरल इतिहास, ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड प्रकाशित, २०११, ISBN: ९७८ ८१ २५० ३२३३ ५

[९]. रं श्री मुगलि, कन्नड़ साहित्य चरित्रे गीता बुक प्रकाशक, २०१४.

[१०]. त. शु. श्यमराय, कन्नड़ साहित्य चरित्रे, कन्नड़ सहित परिष्यत्तु, २०१४.

[११]. बी वि के शास्त्री, "गान कला मंजरी संगीत प्रभंद संकलन" कन्नड़ मत्तु संस्कृति निर्देशानालय संपुट -२, १९९८

[१२]. डॉ. बलदेव वंशी “भारतीय संत परंपरा” केंद्रीय हिंदी निदेशालय के संस्वीकृति-पत्र संख्या ५-६/२००९. ISBN-९७८-९३-८०१४६-५७-७, २००९

[१३]. भुवनेश्वरनाथ मिश्र ‘माधव’ एम्. ए. “मीरा की प्रेम साधना” श्रीअजन्ता प्रेस (प्राइवेट) लिमिटेड पटना -४, संस्करण - जुलाई, १६५७. पृ. सं. १०७, १६५७

[१४]. डॉ. ब्रजवासी लाल श्रीवास्तव एम्. ए. पी-एच.डी “करुणा रस (मध्ययुगीन हिंदी राम-काव्य के परिवेश में)” हिंदी साहित्य संसार, पृ. सं. २१६-२३१, १६६.

[१५]. मैनेजर पांडेय “भक्ति आंदोलन और सूरदास का काव्य” वाणी प्रकाशन, तृतीय संकलन, ISBN-८१-७०५५-२७३-७, २००१

[१६]. डॉ. (श्रीमती) राधा कृष्णमूर्ति एम्. ए. पी-एच.डी. “दक्षिण भारत की संत परंपरा” कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति, प्रथम संस्करण - पृ. सं. १-४३ और १९२- २८८, १९९७.

[१७]. सं. ओमप्रकाश चौरसिया(). “संगीत -रस परम्परा और विचार” वाणी प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, ISBN: ९७८-८१-७०५५-८३१-६, २००१

[१८]. एच. एस. वेंकटेश मूर्ति “कीर्थानकाररू” प्रकाशक, कर्नाटक बुक एजेंसी, ISBN:९७८-८१-२८०-१०९८-९, पृ. सं -१-१०६, २०१८

[२०]. तिरुमलाई बहनें गानकलाभूषण, शास्त्रकौस्तुभ कर्नाटक कलाश्री विदुषी हैं, डॉ. टी. शचीदेवी कर्नाटक कलाश्री विदुषी. टी.शारदा “कर्नाटकी संगीत दर्पण“ भाग-१, प्रकाशकों श्रीनिवास प्रकाशन, पृ. सं १-४६. २०१४.

[२१]. आर. दलवई, कन्नड़ साहित्य कोश, ,कन्नड़ साहित्य परिषट्टु, बेंगलुरु, पृष्ठ. १२, २०१६

[२२]. के.के. भट्ट, हरिदास साहित्य सारा, (कन्नड़ अध्ययन संस्थान, मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर) पृष्ठ, १०, १९८७.

[२३]. यू.सी. मिश्र, हिंदी भाषा संग्रह, (राजकमल प्रकाशन, वाराणसी), पृष्ठ ,१०, २००८.

[२४], एस. बंद्योपाध्याय, द म्यूज़िक ऑफ़ इंडिया: ए पॉपुलर हैंडबुक ऑफ़ हिंदुस्तानी म्यूज़िक, (पिलग्रिम्स पब्लिशिंग, वाराणसी) पृष्ठ २०, २००७.

[२५]. बी. वंशी, भारतीय संत परम्परा, (संतमत प्रकाशन, नई दिल्ली), पृष्ठ २५, २०१०

[२७]. कर्नाटक गानकला परिषद, गानकला मंजरी - दूसरा खंड: संगीत पर लेखों का एक संग्रह, (कन्नड़ और संस्कृति विभाग, कर्नाटक सरकार, बैंगलोर), पृष्ठ ५०

[२८]. आर. रामरे गौड़ा, प्राचीन काव्य चिंतन, (कन्नड़ पुस्तक प्राधिकरण, बैंगलोर), पृष्ठ १००, २०१५.

[२९]. जे. आई. ज़ज्दा, आधुनिक भारतीय संगीत, (स्प्रिंगर) पृष्ठ ४४, २००५.

[३१]. डॉ० दिनेशचन्द्र गुप्त, भक्तिकालीन काव्य में राग और रस, भारती - प्रकाशन, लखन, प्रथमावृत्ति : सन् १९७० ई०.

[३२]. प्रो० देश राजर्जासह माटी एम० ए०, मीराँबाई और उनकी पदावली [मोरांबाई की पदावली का श्रालोचनात्मक एवं व्याख्यात्मक अध्ययन], प्रकाशक अशोक प्रकाशन नई सड़क, दिल्ली, २०१९.

प्रकाशन २०१२.

[३४]. डॉ. सुधांशु कुमार शुक्ल, “भारतीय काव्यशास्त्र : सिद्धांत और समस्याएँ“, नवलोक प्रकाशन भजनपुरा, २०१३.

[३५]. मुकेश गर्ग, साहित्य और संगीत - खण्ड-२, वाणी प्रकाशन. बंदोपाध्य

[३६]. मुकेश गर्ग, साहित्य और संगीत - खण्ड-१, वाणी प्रकाशन.

[३७]. विद्वान् डॉ० के. गणपतिभट्ट, स्न्गीत रस माधुर्य. भारतीय संगीत विद्यालय मालड्डी धारवाड़ - ५८०००७.